Dr. Swarnim Ghosh
(Assistant Professor)
[Mathematical Economics]
Dept. Of Economics
Govt. Degree college
Jakhhini, Varanasi
****
Mob: 9451218739
****
E-mail:
swarnimghosh@gmail.com
****

ECONOMICS
(अर्थशास्त्र)

बी.ए - प्रथम वर्ष (B.A.-1ST YEAR)
प्रश्न पत्र –प्रथम (1ST PAPER)
*****

आर्थिक विश्लेषण के सिद्धांत
(PRINCIPLES OF ECONOMIC ANALYSIS)

*****

इकाई—प्रथम(UNIT-1ST)

अर्थशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषाएं: एक वृहत अध्ययन
MEANING AND DEFINITIONS OF ECONOMICS : A BRIEF STUDY

स्वघोषणा (Disclaimer/Self-Declaration)

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है | आर्थिक/वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पुर्णतः प्रतिबंधित है | सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित , प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगतज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे | इस कंटेंट में जो जानकारी दी गयी है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है |"

" The content is exclusively meant for academic purposes and for enhancing teaching and learning . Any other use for economic / commercial purpose is strictly prohibited, the users of the content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted to advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge."

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहअक्टूबर२०२०

मूल शब्द(KEY WORDS)

१. अर्थशास्त्र
२. धनकेंद्रित
३. कल्याणकेन्द्रित
४. दुर्लभता
५. साधनों का विकास

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहअक्टूबर२०२०

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है व अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञानं है| अर्थशास्त्र एक विकासशील व गतिमान शास्त्र है| जहाँ अर्थशास्त्र का ढांचा दो मुख्य आधारों पर टिका हुआ है ;वे हैं ------

1. साधन जो सीमित है (अर्थात साधनों की पूर्ति सीमित है परन्तु इसे वैकल्पिक प्रयोग में लाया जा सकता है) |
2. आवश्यकतायें जो असीमित हैं (अर्थात मानवीय आवश्यकतायें असीमित , आवर्ती व विभिन्न प्राथमिकताओं वाली होती है)|

इसप्रकार अर्थशास्त्र मनुष्य के रोजमर्रा के क्रिया – कलापों व सामान्य जीवन का अध्ययन है |

सामान्यतः 'अर्थशास्त्र ' संस्कृत शब्दों – 'अर्थ' (धन) और 'शास्त्र' (कला व विज्ञानं) की संधि से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है ---'धन का अध्ययन ' | गौरतलब है कि अंग्रेजी भाषा के अर्थशास्त्र(ECONOMICS) शब्द की ब्युत्पत्ति लैटिन या ग्रीक शब्द ' इकोनोमिका(ECONOMICA) या ओकोनोमिया(OIKONOMIA)' से हुई है जो कि दो शब्दों— 'गृह(OIKOS)' तथा 'नियम (NOMAS)' के मेल से बना है इस तरह इसका अर्थ – 'गृह प्रबंध' है |

कहने का तात्पर्य यह है कि—मनुष्य की आवश्यकतायें अनंत हैं और उन आवश्यकताओं को पूर्ण करने के साधन सीमित हैं | अतः प्रत्येक मनुष्य अपने धन का समुचित प्रयोग या उपयोग करना चाहेगा जिससे उसके अधिक –से - अधिक आवश्यकताओं की संतुष्टि हो सके | इसप्रकार स्पष्ट है कि—------

"अर्थशास्त्र कला तथा विज्ञानं का वह शास्त्र है जो बताता है की मनुष्य विवेकशील(RATIONAL) है और उसे किस प्रकार अपने उपलब्ध सीमित साधनों का प्रयोग करना चाहिए जिससे उसके असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति संतुष्टिपूर्वक हो सके |"

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहअक्टूबर२०२०

प्रो.सैम्युल्सन कहते हैं कि----" अर्थशास्त्र कला समूह में प्राचीनतम तथा विज्ञानं समूह में नवीनतम विषय है | वस्तुतः यह समस्त सामाजिक विज्ञानों (SOCIAL SCIENCES) की रानी है |"

■आर्थिक सिद्धांत या आर्थिक विश्लेषण(ECONOMIC THEORY OR ANALYSIS) : जहाँ तक आर्थिक विश्लेषण के सिद्धांत का प्रश्न है तो आर्थिक सिद्धांत आर्थिक घटनाओं के कारण(CAUSE) और परिणाम(EFFECT) के बीच संबंधों का एक तार्किक ढांचा प्रदान करता है जो इस तथ्य की व्याख्या करता है कि एक पहलु दुसरे पहलु से कैसे सम्बंधित है | इसप्रकार आर्थिक सिद्धांत हमें 'आर्थिक यन्त्र (ECONOMIC TOOL) ' प्रदान करता है ताकि हम वास्तविक जगत की आर्थिक समस्याओं को समझ कर उनका यथोचित विश्लेषण कर समस्याओं के समाधान हेतु आर्थिक नीतियाँ प्रस्तुत कर सकें |

■ अर्थशास्त्र की परिभाषाएं(DEFINITIONS OF ECONOMICS) : किसी भी विषय के अध्ययन से पूर्व उसकी परिभाषाओं का ज्ञान होना अति आवश्यक है | सम्बंधित विषय की परिभाषा के द्वारा ही उसके विषय –सामग्री , प्रकृति व क्षेत्र के बारे में क्रमबद्ध ज्ञान प्राप्त होता है |चूँकि अर्थशास्त्र विषय का कई अन्य शास्त्रों से भी गहरा सम्बन्ध है , इसलिए इसकी एक निश्चित परिभाषा देना कठिन है | समय – समय पर विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र की विभिन्न परिभाषाएं दीं हैं और प्रत्येक अर्थशास्त्री ने परिस्थिति के अनुसार ही अर्थशास्त्र को परिभाषित किया है |
श्रीमती बारबरा बूटन कहतीं हैं कि-----
"जहाँ छः अर्थशास्त्री होते हैं वहां सात मत होते हैं |"
अतः अध्ययन की सरलता की दृष्टि से सामान्यतया अर्थशास्त्र की परिभाषाओं को पांच भागों में विभाजित कर अध्ययन किया जाता है वे हैं ;

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहअक्टूबर२०२०

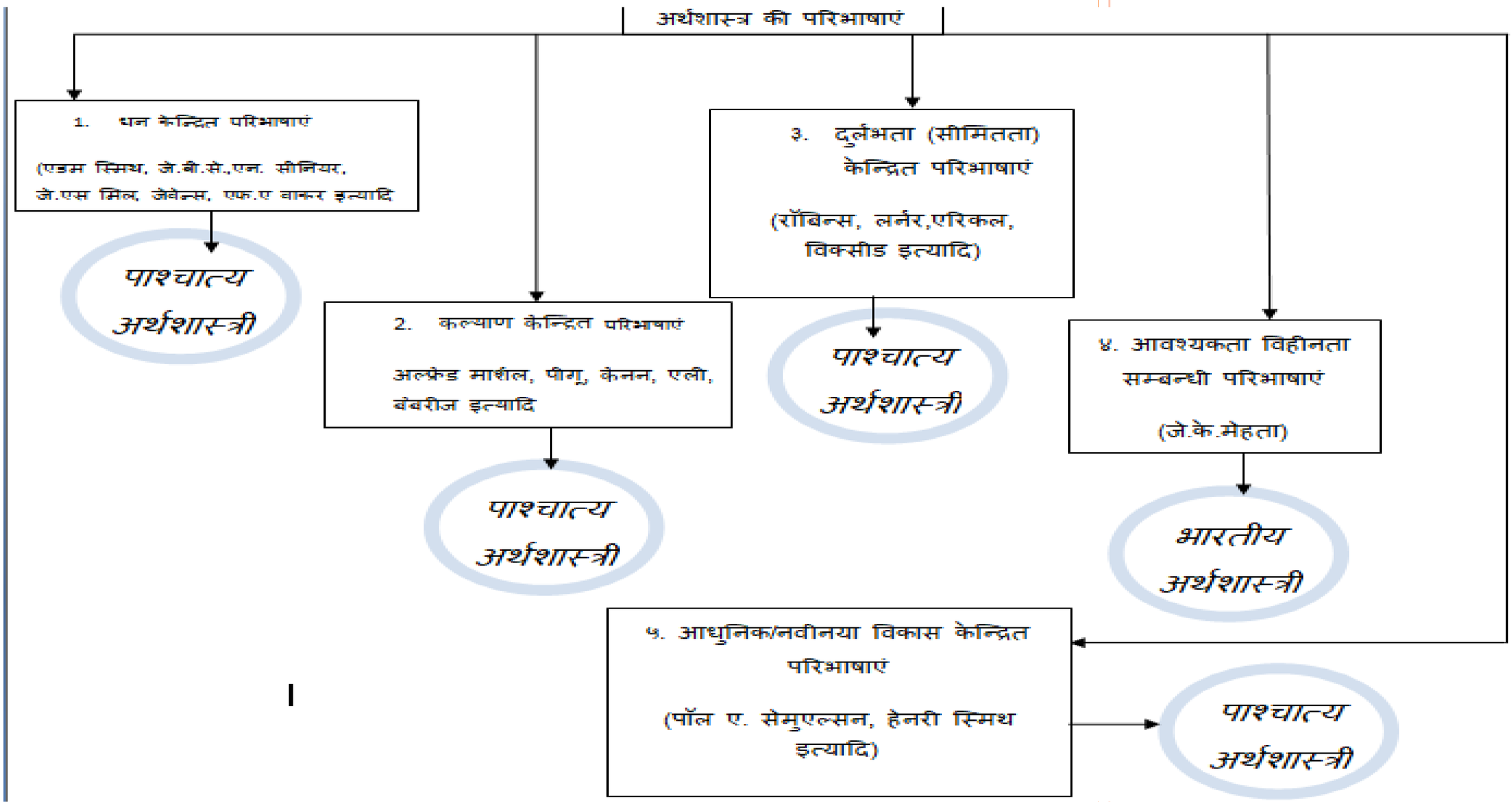

चित्र :१.१—अर्थशास्त्र की विभिन्न परिभाषाएं एवं वर्गीकरण

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहअक्टूबर२०२०

1. धन केन्द्रित परिभाषाएं (Wealth- Centric Definitions) :

सर्वप्रथम प्रो. एडम स्मिथ (१७२३-१७९०) ; प्रतिष्ठित विचारधारा के संस्थापक जिन्हें 'अर्थशास्त्र का जनक या पिता(Father of Economics) 'भी कहा जाता है , इन्होने सन १७७६ इसवी में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'राष्ट्रों के धन के स्वरुप तथा कारणों की खोज(An Enquiry Into The Nature and Causes of Wealth of Nations) ' में अर्थशास्त्र का क्रमबद्ध , वैज्ञानिक व तार्किक अध्ययन कर अर्थशास्त्र की निम्न परिभाषा दी है ---

(क) एडम स्मिथ के शब्दों में :

"अर्थशास्त्र राष्ट्रों के धन के स्वरुप तथा कारणों से सम्बंधित है |"

"Economics is a study concerned with an Enquiry into the Nature and Causes of Wealth of Nations."

संक्षेप में , एडम स्मिथ के अनुसार : "अर्थशास्त्र धन का विज्ञानं है "|

(ख) वाकर के अनुसार :

"अर्थशास्त्र ज्ञान के उस भाग का नाम है जिसका सम्बन्ध धन से है |"

(ग) जे. बी. से. के अनुसार :

" अर्थशास्त्र वह विज्ञानं है जो धन का अध्ययन करता है "|

स्पष्ट है की प्रतिष्ठित विचारधारा(Classical Economists) के संस्थापक समस्त अर्थशास्त्री यही मानते थे कि मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं का अंतिम उद्धेश्य धन अर्जित करना है |

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाह्अक्टूबर२०२०

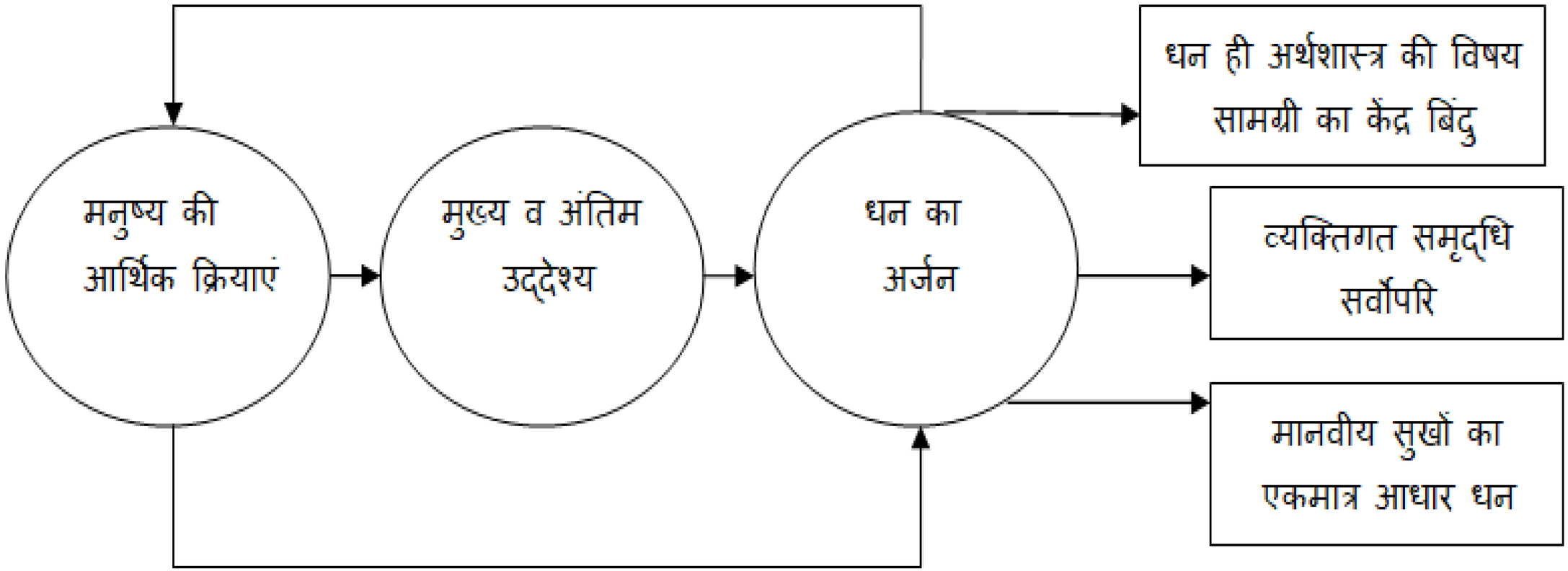

चित्र :१.२ धन केन्द्रित अवधारणा

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहअक्टूबर२०२०

❑धन केन्द्रित परिभाषाओं की आलोचनाएँ(Criticisms of Wealth –Centric Definitions) :

(अ) धन पर आवश्यकता से अधिक बल दिए जाने के कारन धन को साध्य मान लिया गया जिसके वजह से ही कारलाइल, रस्किन आदि विद्वानों ने धन केन्द्रित विचारधारा को 'कुबेर की विद्या ', 'घृणित विज्ञानं ', रोटी –मख्खन का शास्त्र ' कह कर कटु आलोचनाएँ कीं हैं |

(ब) एडम स्मिथ ने एक आर्थिक मनुष्य (Economic man) की कल्पना कर डाली जिसका उद्देश्य अपने स्वार्थ से प्रेरित होकर धन का अर्जन करना था जिसकी आलोचकों द्वारा घोर भर्त्सना की गयी |

(स) अर्थशास्त्र के क्षेत्र को संकुचित कर दिया गया जिसमे धन के अंतर्गत केवल भौतिक पदार्थों को ही शामिल किया गया व सेवाओं को नहीं जोड़ा गया जोकि अनुचित था | यही कारण था कि १९ वीं सदी में इस परिभाषा का परित्याग कर दिया गया |

(२). कल्याण केन्द्रित परिभाषाएं(Welfare Centric Definitions) : १९वीं सदी में नव- प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने माना कि अर्थशास्त्र का उद्देश्य केवल धन का उपार्जन करना ही नहीं है अपितु धन की उत्पत्ति से अधिक महत्वपूर्ण यह है कि धन का उपयोग अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु की जाये ताकि इससे भौतिक कल्याण में अभिवृद्धि हो सके | कहने का तात्पर्य यह है कि वे धन और मानव – कल्याण दोनों को ही अर्थशास्त्र की विषय –सामग्री मानकर मनुष्य के आर्थिक कल्याण पर अधिक बल देते हैं | जहाँ धन साध्य न होकर साधन है जिसकी सहायता से मानव-कल्याण में बढोतरी की जाती है |

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाह्अक्टूबर२०२०

(अ). प्रो.अल्फ्रेड मार्शल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ' PRINCIPLES OF ECONOMICS'(P.1) में कहा है कि---
" अर्थशास्त्र मानव जीवन के साधारण व्यवसाय का अध्ययन है | इसमें व्यक्तिगत तथा सामाजिक क्रियाओं के उस भाग की जांच की जाती है जिसका भौतिक सुख के साधनों की प्राप्ति और उपभोग से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है "|

"ECONOMICS IS A STUDY OF MANKIND IN THE ORDINARY BUSINESS OF LIFE, IT EXAMINES THAT PART OF INDIVIDUAL AND SOCIAL ACTION WHICH IS MOST CLOSELY CONNECTED WITH THE ATTAINMENT AND WITH THE USE OF MATERIALS REQUISITES OF WELL – BEING."

संक्षेप में , " अर्थशास्त्र भौतिक कल्याण का अध्ययन है "|

(ब). प्रो. पीगू कहते हैं कि----" अर्थशास्त्र आर्थिक कल्याण का अध्ययन है और आर्थिक कल्याण के उस भाग तक सीमित रहता है जिसको प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से मुद्रा में मापदंड से सम्बंधित किया जा सकता है |"
धन की अपेक्षा मनुष्य तथा मानवीय कल्याण/भौतिक कल्याण पर बल

(स) प्रो. केनन के शब्दों में ---" राजनीतिक अर्थशास्त्र का उद्देश्य उन सामान्य कारणों की व्याख्या करना है जिन पर मनुष्य का भौतिक कल्याण निर्भर करता है "|

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाह्अक्टूबर२०२०

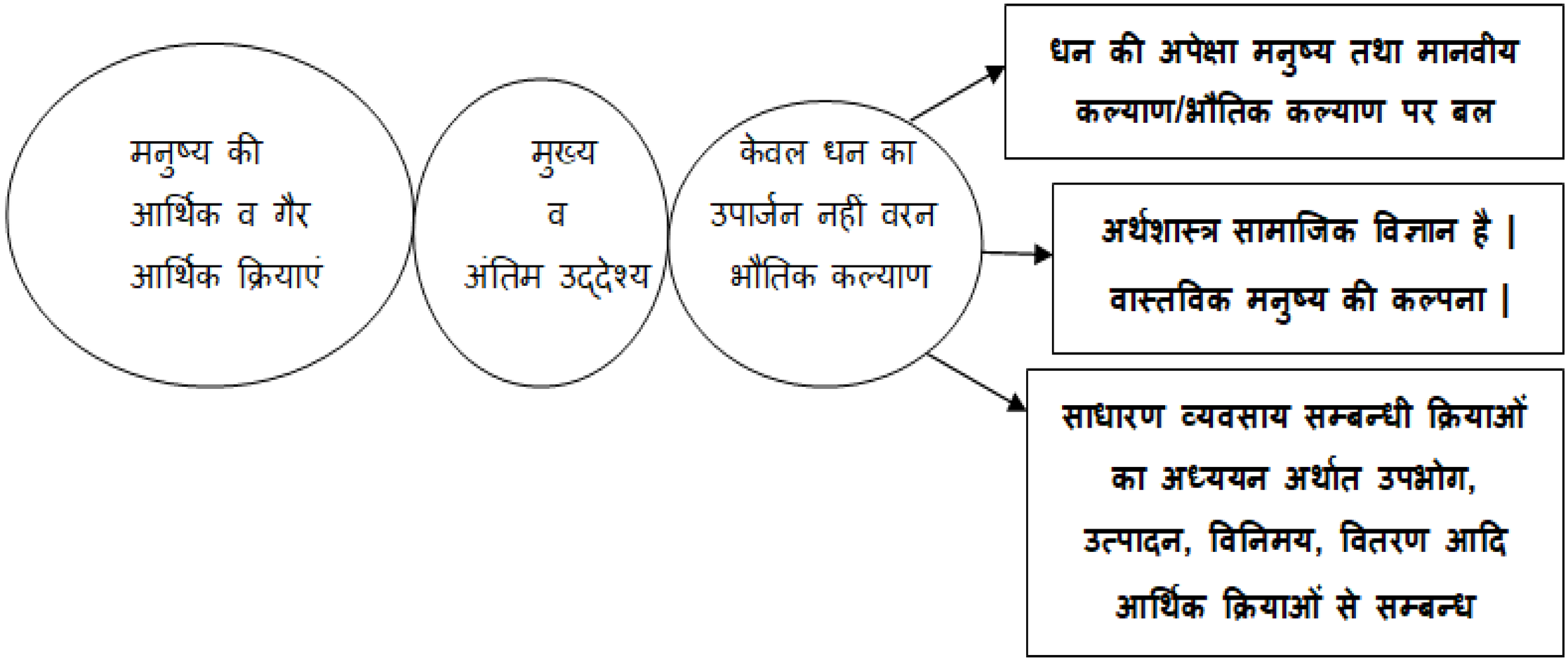

चित्र : १.३ मानव-कल्याण केन्द्रित अवधारणा

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहअक्टूबर२०२०

कल्याण केन्द्रित परिभाषाओं की आलोचनाएँ(CRITICISMS OF WELFARE CENTRIC DEFINITIONS) :

कल्याण केन्द्रित परिभाषाओं की आलोचना मुख्य रूप से प्रो. रॉबिन्स द्वारा की गयी है |

(अ) ये परिभाषाएं श्रेणी विभाजक(CLASSIFICATORY) हैं न कि विश्लेषणात्मक (ANALYTICAL) |

(ब) प्रो. मार्शल ने अर्थशास्त्र के अध्ययन को केवल 'भौतिक साधनों की प्राप्ति ' तथा उपभोग तक ही सीमित रखा जबकि साधन अभौतिक भी होते हैं जैसे सेवाएँ | अतः साधनों का वर्गीकरण अनुचित है |

(स) मनुष्य के कार्यों को आर्थिक तथा अनार्थिक कार्यों में बांटना भी अनुचित व असंभव है |

(द) प्रो. रॉबिन्स के अनुसर अर्थशास्त्र का कल्याण से सम्बन्ध स्थापित करना ठीक नहीं है | उदहारण के तौर पर , शराब, सिगरेट व अन्य मादक पदार्थों का उत्पादन तथा उपभोग , मानव –कल्याण के हित में नहीं है परन्तु अर्थशास्त्र में फिर भी इसका अध्ययन किया जाता है |

(य) असाधारण व्यवसाय के अंतर्गत किये गये आर्थिक क्रियाओं का जिक्र नहीं होना |

(र) कल्याण को मापने का द्रव्य रूपी पैमाना अपर्याप्त है |

(ल) एक व्यक्ति की एक ही क्रिया एक समय में आर्थिक तो अन्य समय में अनार्थिक सिद्ध हो जाती है ; जैसे –एक कवि की कविता पढ़ने की क्रिया कवि-सम्मेलन में आर्थिक जबकि मित्रों के बीच कविता पढ़ना अनार्थिक सिद्ध हो जाती है |

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहअक्टूबर२०२०

(व) अर्थशास्त्र का क्षेत्र अधिक संकुचित हो जाता है व वह अपने उद्देश्य के प्रति तटस्थ रहता है | स्पष्ट है कि, यद्धपि मार्शल की परिभाषा आदर्शात्मक विज्ञानं पर आधारित व सरल है तथापि तार्किक दृष्टि से यह दोषपूर्ण है और अर्थशास्त्र के वैज्ञानिक आधार को कमजोर करती हुई प्रतीत होती है | अतएव दुर्लभता या सीमितता सम्बन्धी परिभाषाओं का उदय हुआ |

(३). दुर्लभता या सीमितता केन्द्रित परिभाषाएं(SCARCITY CENTRIC DEFINITIONS) : सन १९३२ में प्रो. रॉबिन्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक " AN ESSAY ON NATURE AND SIGNIFICANCE OF ECONOMIC SCIENCE" में प्रो. मार्शल के कल्याण सम्बन्धी विचारधारा की कटु आलोचना करते हुए उनकी परिभाषा को संकुचित , अव्यवहारिक व भ्रामक करार करते हुए अर्थशास्त्र को नया दृष्टिकोण प्रदान किया | प्रो. रॉबिन्स ने न तो धन पर अधिक जोर दिया और न ही मनुष्य के कल्याण पर बल दिया बल्कि उन्होने व्यक्ति के असीमित आवश्यकताओं का उसके सीमित साधनों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया है |सेम्युल्सन , फ्रीडमेन जैसे विख्यात अर्थशास्त्री भी रॉबिन्स द्वारा प्रतिपादित अर्थशास्त्र की परिभाषा को ही मान्यता देते हैं |

(अ) प्रो.रॉबिन्स कहते हैं कि---" अर्थशास्त्र वह विज्ञानं है जिसमें साध्यों और सीमित तथा अनेक उपयोग वाले साधनों से सम्बंधित मानव-व्यवहार का अध्ययन किया जाता है "|

" ECONOMICS IS THE SCIENCE WHICH STUDIES HUMAN BEHAVIOUR AS A RELATIONSHIP BETWEEN ENDS AND SCARCE MEANS WHICH HAVE ALTERNATIVE USERS."

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहअक्टूबर२०२०

पुनः प्रो.रॉबिन्स कहते हैं कि---
"" अर्थशास्त्र उस मानव – व्यवहार का अध्ययन करता है जोकि साधनों की सीमितता से प्रभावित होता है | मानव के इस व्यवहार का रूप चुनाव करने का हो जाता है |"

" ECONOMICS STUDIES THAT HUMAN BEHAVIOUR WHICH IS AFFECTED BY THE SCARCITY OR RESOURCES. THIS BEHAVIOUR TAKES THE FORM OF CHOICE-MAKING ."

इन्होने माना कि मनुष्य की आवश्यकताएं अनंत व असीमित हैं वहीँ आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए साधन सीमित हैं परन्तु साधनों का वैकल्पिक प्रयोग हो सकता है व आवश्यकताओं की तीव्रता में भिन्नता पाई जाती है | उन्होंने अर्थशास्त्र को वास्तविक विज्ञानं माना है | उनके अनुसार असीमित आवश्यकताओं या साध्यों व सीमित और अनेक उपयोग वाले साधनों के बीच मानवीय आचरण 'चुनाव या निर्णय करने ' की होती है यह चुनाव करने की क्रिया की समस्या (PROBLEM OF CHOICE)ही आर्थिक समस्या(ECONOMIC PROBLEM) कहलाती है |

अतः प्रो. रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र के मानवीय व्यव्हार के अध्ययन को 'सीमित साधनों के आबंटन व वितरण से सम्बंधित करने का कार्य किया है | यहाँ अर्थशास्त्र की समस्या केवल 'किफ़ायत की समस्या ' है |

संक्षेप में , प्रो.रॉबिन्स कहते है कि----" अर्थशास्त्र चुनाव का विज्ञानं है|"

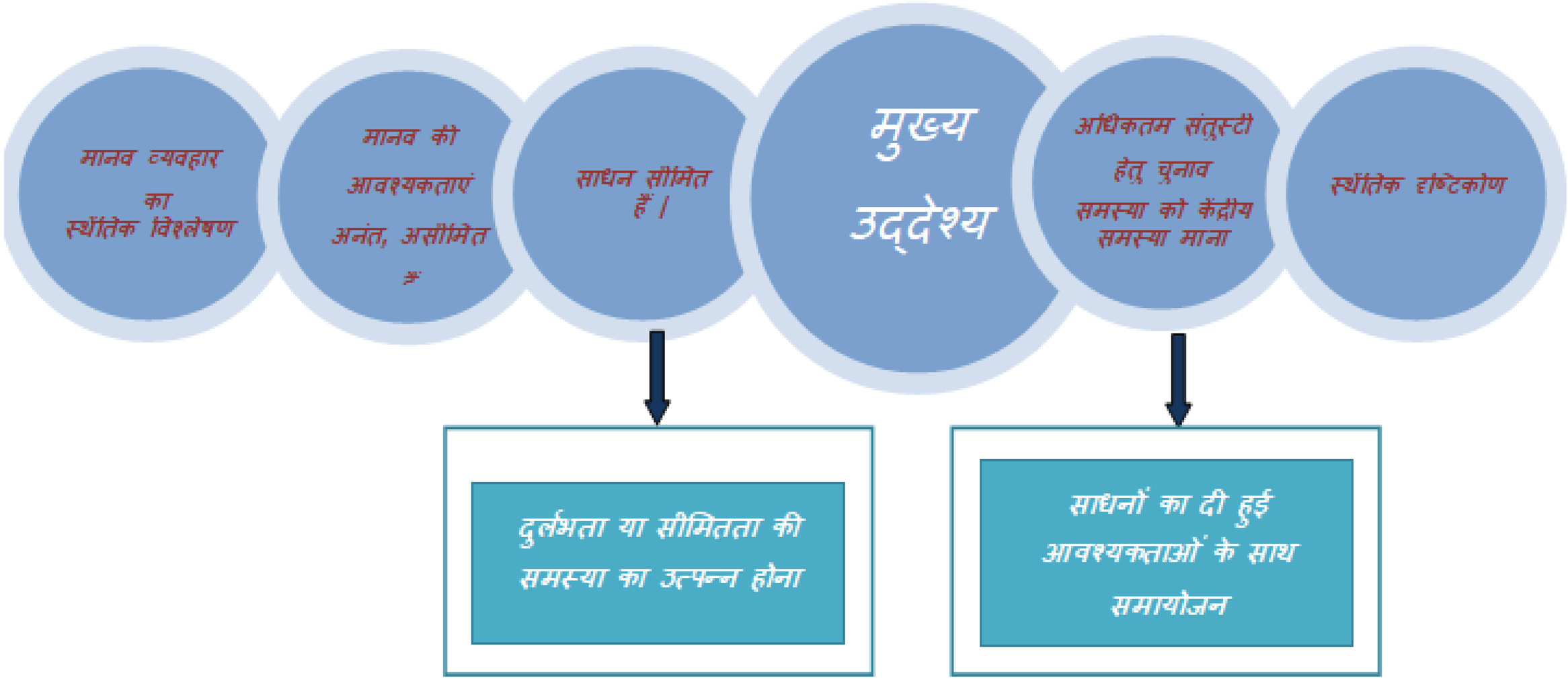

चित्र :१.४ दुर्लभता या सीमितता केन्द्रित अवधारणा

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहअक्टूबर२०२०

(ब). प्रो. फ्रीडमेन के शब्दों में ---“ यदि साधन सीमित न हों तो कोई समस्या नहीं होगी , ऐसी स्थिति निर्वाण या मुक्ति की होगी | यदि साधन सीमित हों और साध्य केवल एक हो तो साधनों के प्रयोग की समस्या ‘टेक्नोलॉजिकल समस्या ‘ होगी |”

दुर्लभता या सीमितता केन्द्रित परिभाषाओं की आलोचनाएं(CRITICISMS OF SCARCITY CENTRIC DEFINITIONS) :

प्रो.रोबर्ट्सन द्वारा प्रो. रॉबिन्स की परिभाषा की आलोचना करते हुए कहा गया है कि अर्थशास्त्र के क्षेत्र की एक साथ एक ही समय पर अधिक विस्तृत व अधिक संकीर्ण होने की व्याख्या की गयी |
(ब) प्रो. रॉबिन्स की परिभाषा की आलोचना इस आधार पर भी की गयी की उन्होंने अर्थशास्त्र के सामाजिक स्वभाव पर उचित बल नहीं दिया |

(स) वुटन, फ्रेजर आदि आलोचकों ने प्रो. रॉबिन्स की परिभाषा की आलोचना करते हुए कहा की अर्थशास्त्र उदेश्यों के बीच तटस्थ नहीं है इनकी परिभाषा में प्रो. मार्शल का कल्याण का विचार ‘ चोर दरवाजे’ से प्रवेश करता है |

(द) अर्थशास्त्र केवल वास्तविक विज्ञानं नहीं बल्कि कला भी है |

(य) आलोचकों के अनुसार किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को विभाजित करना सही नहीं | प्रो.रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र के व्यक्तित्व को दो भागों में बाँट दिया है ---एक अर्थशास्त्री के रूप में व दूसरा नागरिक के रूप में |

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाह्अक्टूबर२०२०

(र) आलोचकों के अनुसार प्रो. रॉबिन्स की परिभाषा का स्थेतिक दृष्टिकोण आर्थिक विकास की समस्या को शामिल करने में सक्षम नहीं सिद्ध होती है | सिद्धांत बनाने वाले को सिद्धांत प्रयोगकर्ता भी होना चाहिए |

* प्रो. मार्शल तथा प्रो. रॉबिन्स की परिभाषाओं की तुलना(COMPARISON OF THE DEFINITIONS OF MARSHALL AND ROBBINS) : यधपि दोनों की परिभाषाओं में कई मुख्य अंतर स्वतः परिलक्षित है तथापि दोनों की परिभाशयों में कुछ समानताएं भी दृष्टिगोचर होती हैं जो कि निम्न है -------

(१) मार्शल तथा रॉबिन्स की परिभाषाओं में समानता (SIMILARITIES IN BOTH DEFINITIONS): (क) दोनों ही ने अर्थशास्त्र की व्याख्या विज्ञानं के रूप में की है |

(ख) प्रो. मार्शल के धन व प्रो. रॉबिन्स के सीमित साधनों का एक ही अर्थ है क्यूंकि सीमितता धन का ही प्रमुख गुण है |

(ग) जहाँ मार्शल ने अधिकतम कल्याण(MAXIMUM WELFARE) शब्द का प्रयोग किया है तो रॉबिन्स ने अधिकतम संतुष्टि(MAXIMUM SATISFACTION) शब्द का प्रयोग किया है जो की स्वभाव में समान हैं |

(२) मार्शल तथा रॉबिन्स की परिभाषाओं में असमानता : (क) मार्शल ने अर्थशास्त्र को आदर्शात्मक विज्ञानं(NORMATIVE SCIENCE) माना तो वहीं रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र को वास्तविक विज्ञानं(POSITIVE SCIENCE) माना है |(ख) मार्शल ने अर्थशास्त्र को एक सामाजिक विज्ञानं माना तो वहीँ रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र को मानव विज्ञानं माना है |

(ग) जहाँ एक ओर मार्शल की परिभाषा वर्गकारिणी(CLASSIFICATORY) है तो वहीँ रोब्बिंस की परिभाषा विश्लेषणात्मक(ANALYTICAL) है |

(घ) मार्शल की परिभाषा में धन सम्बंधित क्रियाओं का अध्ययन किया गया है जिसका उद्देश्य मानव कल्याण है तो वहीँ रॉबिन्स ने इसे चुनाव का विज्ञानं मान कर मानव व्यवहार का अध्ययन बताया है |

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाह३अक्टूबर२०२०

(४). आवश्यकता विहीनता केन्द्रित परिभाषाएं(NEEDLESSNESS/ WANTLESSNESS CENTRIC DEFINITIONS)

सुप्रसिद्ध भारतीय अर्थशास्त्री व इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जे.के.मेहता ने भारतीय दर्शन के आधार पर पाश्चात्य अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोण से सर्वथा भिन्न दृष्टिकोण अपनाते हुए अर्थशास्त्र की आवश्यकता विहीनता केन्द्रित परिभाषा देते हुए कहा है कि----" अर्थशास्त्र वह विज्ञानं है जो मानवीय आचरण का इक्षा रहित अवस्था में पहुँचने के लिए साधन के रूप में अध्ययन करता है |"

स्पष्ट है कि उनके अनुसार मनुष्य का व्यवहार उसके मस्तिष्क की संतुलनहीनता का परिचायक है जिससे मनुष्य की आवश्यकताओं व उन्हें संतुष्ट करने के साधनों के बीच अंतर पैदा होता है | चूँकि इक्षारहित अवस्था में जबकि मानव का मस्तिष्क पूर्णतया संतुलित पाया जाता है तो इस स्थितिको 'सुख की स्थिति ' कही जाती है| अर्थशास्त्र का अंतिम लक्ष्य इसी सुख को अधिकतम करना होना चाहिए |

प्रो.मेहता कहते हैं कि---"मानसिक संतुलन प्राप्त करने पर ही व्यक्ति को सुख का अनुभव प्राप्त होता है | आवश्यकता ही दुःख की जननी है अतएव इसको कम से कम करने का लक्ष्य होना चाहिए |'

* आवश्यकता विहीनता केन्द्रित परिभाषाओं की आलोचनाएँ (CRITICISMS OF NEEDLESNESS CENTRIC DEFINITIONS):----

(क) आलोचकों के अनुसार वर्तमान भौतिकता के युग में इक्षा रहित मानव की कल्पना करना मुश्किल है| अतः इक्षाओं में कमी नहीं की जा सकतीहै |

(ख) आलोचकों ने प्रो. मेहता के विश्लेषण को विरोधाभासी मानते हुए उनके विश्लेषण को अव्यवहारिक बताया है तथा कहा है कि अधिकतम सुख की धारणा आवश्यकताओं को कम करते हुए संभव नहीं है |

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाह्अक्टूबर२०२०

1. आवश्यकता ही दुख की जननी है |

2. आवश्यकता विहीन अर्थशास्त आवश्यक सुख की प्राप्ति हेतु अत्यंत ही आवश्यक है जो मानवीय आर्थिक असंतुलन का कारण है |

चित्र :१.५ आवश्यकता विहीन अर्थशास्त्र केन्द्रित अवधारणा

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहअक्टूबर२०२०

(ग) आलोचकों का कहना है कि आर्थिक क्रियाओं के अभाव में अर्थशास्त्र ही अस्तित्व विहीन हो जायेगा क्योंकी अर्थशास्त्र मूलतः आवश्यकताओं की असिमितता पर ही आधारित होती है |

(घ) आलोचकों के अनुसार अर्थशास्त्र पुर्णतः आदर्शात्मक विज्ञानं नहीं है |

(५) आधुनिक/नवीन या विकास-केन्द्रित परिभाषाएं(MODERN/GROWTH CENTRIC DEFINITIONS } :

आधुनिक युग में अर्थशास्त्र की व्यापकता को देखते हुए नोबेल पुरुस्कार विजेता प्रो.सम्युलसन ने अर्थशास्त्र की एक ऐसी परिभाषा की आवश्यकता पर बल दिया जो न केवल' सीमित साधनों के वितरण या आवंटन'(ALLOCATION OF SCARCE RESOURCES) पर ध्यान दे वरन साधनों के विकास या यूँ कहें आर्थिक विकास(GROWTH OF RESOURCES)' पर भी ध्यान दे |

(क) प्रो.सेम्युल्सन के अनुसार---" अर्थशास्त्र इस बात का अध्ययन करता है कि व्यक्ति और समाज अनेक प्रयोग में आ सकने वाले उत्पादन के सीमित साधनों का चुनाव एक समयावधि में विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में लगाने और उनको समाज में विभिन्न वस्तुओं और समूहों में उपभोग हेतु , वर्तमान तथा भविष्य में , बांटने के लिए किस प्रकार करते हैं , ऐसा वे चाहे द्रव्य का प्रयोग कर के करें अथवा इसके बिना करें | यह साधनों के आवंटन के स्वरुप में सुधार करने की लागतों एवं उपयोगिताओं का विश्लेषण करता है |"

" ECONOMICS IS THE STUDY OF HOW MEN AND SOCIETY END UP CHOOSING , WITH OR WITHOUT THE USE OF MONEY, TO EMPLOY SCARCE PRODUCTIVE RESOURCES WHICH COULD HAVE ALTERNATIVE USES TO PRODUCE VARIOUS COMMODITIES OVER TIME DISTRIBUTE THEM FOR CONSUMPTION , NOW AND IN THE FUTURE , AMONG VARIOUS PEOPLE AND GROUPS IN SOCIETY . IT ANALYSES THE COSTS AND BENEFITS OF IMPROVING PATTERNS OF RESOURCE ALLOCATION."

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहअक्टूबर२०२०

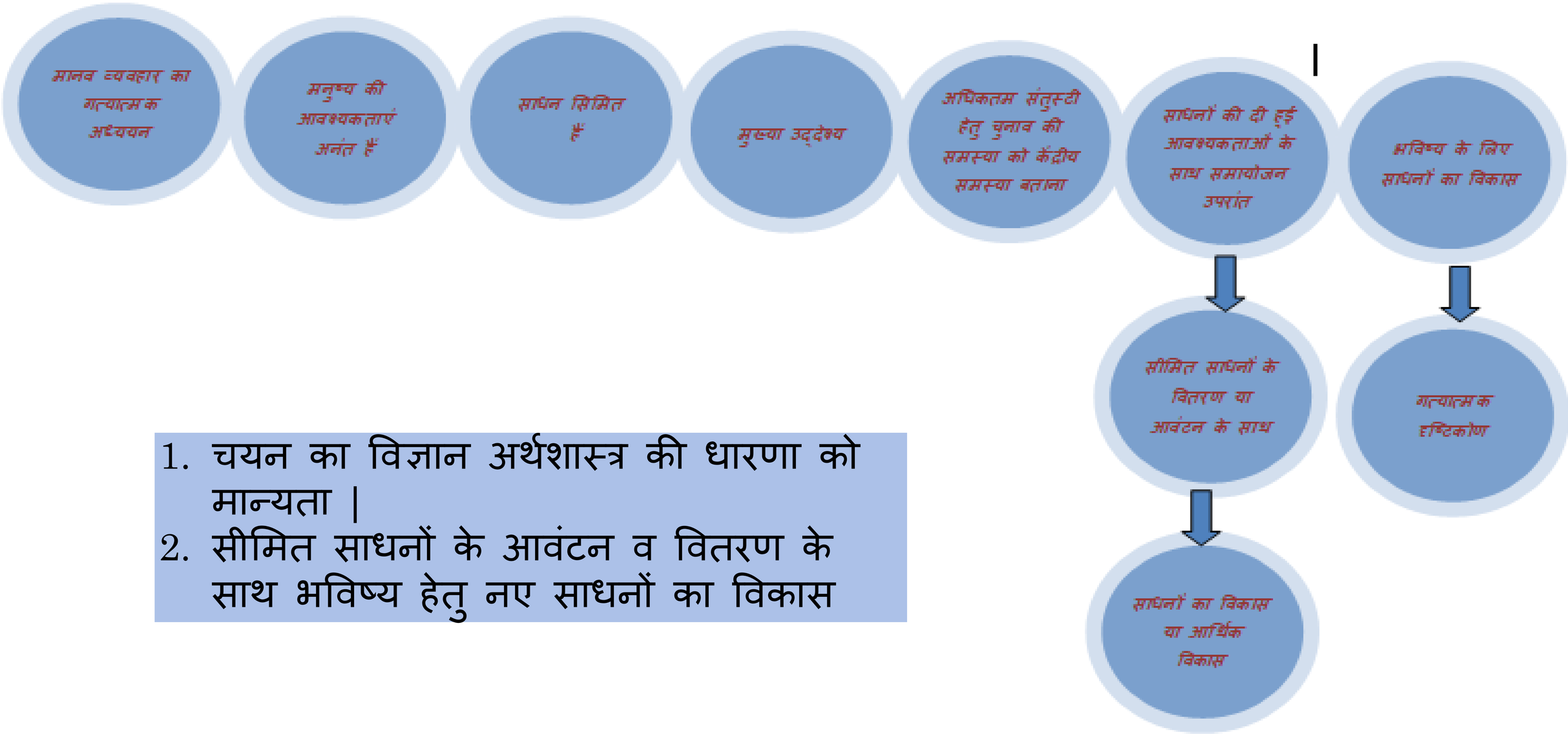

1. चयन का विज्ञान अर्थशास्त्र की धारणा को मान्यता |
2. सीमित साधनों के आवंटन व वितरण के साथ भविष्य हेतु नए साधनों का विकास

चित्र :१.६ विकास – केन्द्रित आधुनिक अवधारणा

(ख) प्रो. के. जी.सेठ के अनुसार ---" अर्थशास्त्र उस मानव-व्यवहार का अध्ययन करता है जिसका सम्बन्ध साध्यों के सन्दर्भ में साधनों के परिवर्तनों एवं विकास से होता है |"

(ग)प्रो.हिक्स के अनुसार ---" अर्थशास्त्र में मानव व्यवहार के विशिष्ट पहलू का अध्ययन किया जाता है जहाँ अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो व्यवहारिक क्रियाकलापों का अध्ययन करता है |"
स्पष्ट है कि आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने अर्थशास्त्र का विकासवादी व कल्याणकारी दोनों ही दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए अर्थशास्त्र के क्षेत्र को अधिक वास्तविक बना दिया है | उन्होंने साधनों की सीमितता या चुनाव की समस्या को अर्थशास्त्र की केन्द्रीय समस्या मानते हुए अर्थशास्त्र का प्रावेगिक या गत्यात्मक दृष्टिकोण की व्याख्या की है |

निष्कर्ष(CONCLUSION) :

निष्कर्ष के रूप में यही कहा जा सकता है कि प्रो. मार्शल की परिभाषा सरल होते हुए भी तार्किक दृष्टिकोण से दोषपूर्ण है जो अर्थशास्त्र के वैज्ञानिक आधार को कमजोर करती है तो वहीँ प्रो.रॉबिन्स की परिभाषा भी दोषपूर्ण है हालाँकि प्रो. मार्शल की तुलना में वे अर्थशास्त्र की विश्लेषणात्मक व तार्किक ढांचा प्रस्तुत करते हैं परन्तु यह अवधारणा अर्थशास्त्र का स्थैतिक विश्लेषण करती है |सिद्धांत की दृष्टि से रॉबिन्स की परिभाषा श्रेष्ठतम है तो वहीँ व्यवहार की दृष्टि से मार्शल की परिभाषा श्रेष्ठतम है |
प्रो. मेहता की परिभाषा भी भौतिकता के इस युग में समीचीन नहीं है |
अर्थशास्त्र के आधुनिक विकास के मध्येनजर आधुनिक या विकास केन्द्रित परिभाषाएं... विशेषकर प्रो. सेम्युल्सन की अर्थशास्त्र की अवधारणा अन्य सभी परिभाषाओँ की तुलना में श्रेष्ठ , गत्यात्मक , अधिक समीचीन व आर्थिक समस्या को सही व क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करने में सक्षम प्रतीत होती है |

#सर्वाधिकारसुरक्षितविद्यादानमाहअक्टूबर२०२०

सन्दर्भ ग्रन्थ :

१. मार्शल : प्रिंसिपल्स ऑफ़ इकोनॉमिक्स , आठवां संस्करण, पृष्ठ १ |
२. जॉन रोबिनसन : द सेकंड क्राइसिस ऑफ़ इकोनोमिकथ्योरी (१९७४)|
३. बौल्डिंग : प्रिंसिपल्स ऑफ़ इकॉनमी |
४. रॉबिन्स : नेचर एंड सिग्निफिकेंस ऑफ़ इकनोमिक साइंस(१९३२) |
५. जे.के.मेहता : स्टडीज इन एडवांस्ड इकनोमिक थ्योरी |
६. वाचस्पति गैरोला : कोटिल्य का अर्थशास्त्र |
७. मिल्टन फ्रीडमेन: प्राइस थ्योरी ए प्रोविजिनल टेक्स्ट ,पृष्ठ .६ |
८. वाकर : पोलिटिकल इकॉनमी (१८८३)|
९. केनन: वेल्थ पृष्ठ .१७ |
१०. पॉल ए सम्युल्सन : इकोनॉमिक्स ऍन इंट्रोडक्टरी एनालिसिस , २० वां संस्करण |

****